

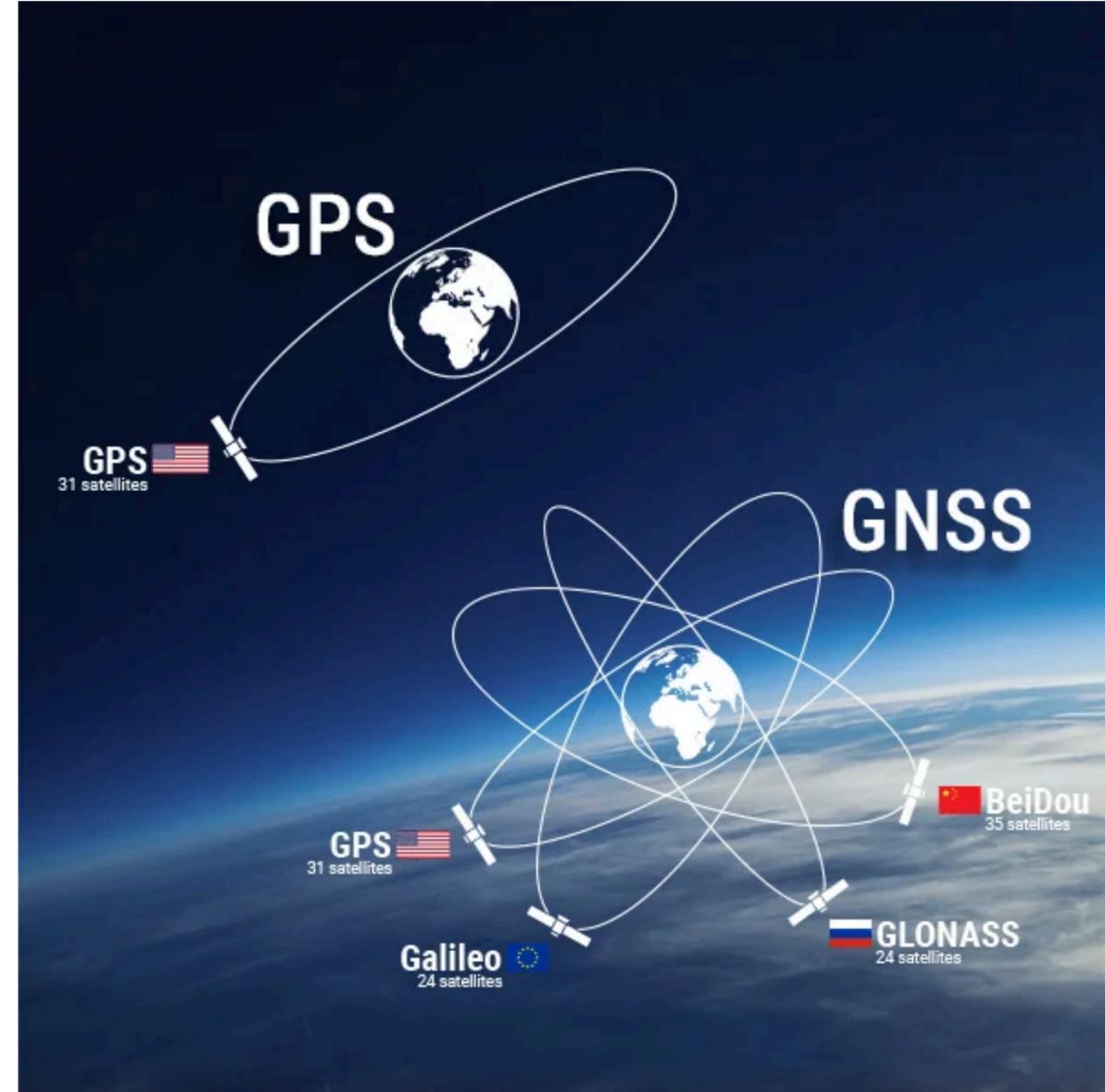
सेटेलाइट से कटेगा टोल



- केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग ने **GNSS** शुरू करने का फैसला किया।

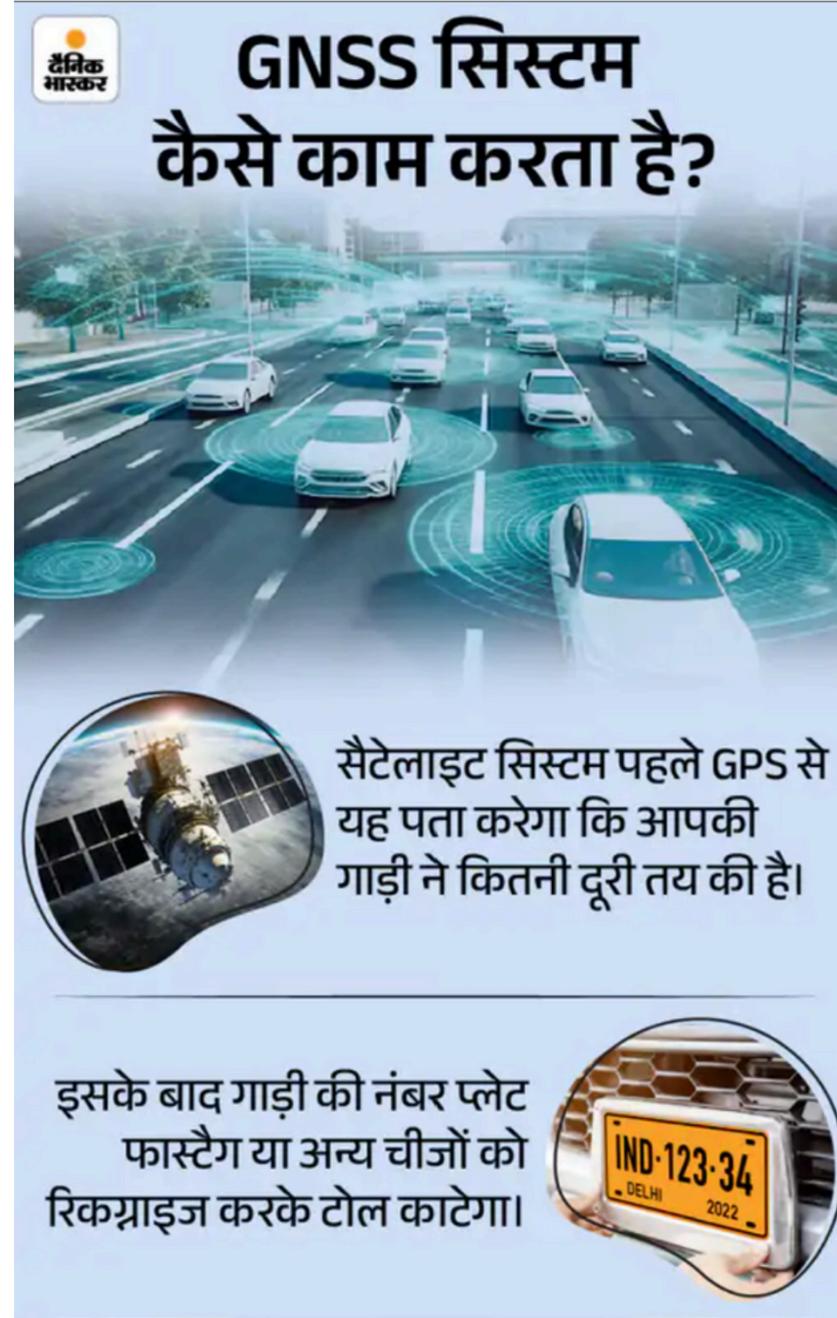
क्या है **GNSS** ?

- ग्लोबल नेविगेशन सेटेलाइट सिस्टम
- सैटेलाइट बेस्ट यूनिट



कैसे काम करेगा

- वाहनों में ऑन-बोर्ड यूनिट (DBU) या ट्रैकिंग डिवाइस लगाई जाएगी।
- GNSS से लैस प्राइवेट कार मालिकों के लिए हर दिन नेशनल हाइवे या एक्सप्रेस वे पर 30 किमी. तक का सफर टैक्स फ्री।



GNSS सिस्टम कैसे काम करता है?

सैटेलाइट सिस्टम पहले GPS से यह पता करेगा कि आपकी गाड़ी ने कितनी दूरी तय की है।

इसके बाद गाड़ी की नंबर प्लेट फास्टैग या अन्य चीजों को रिकग्नाइज करके टोल काटेगा।



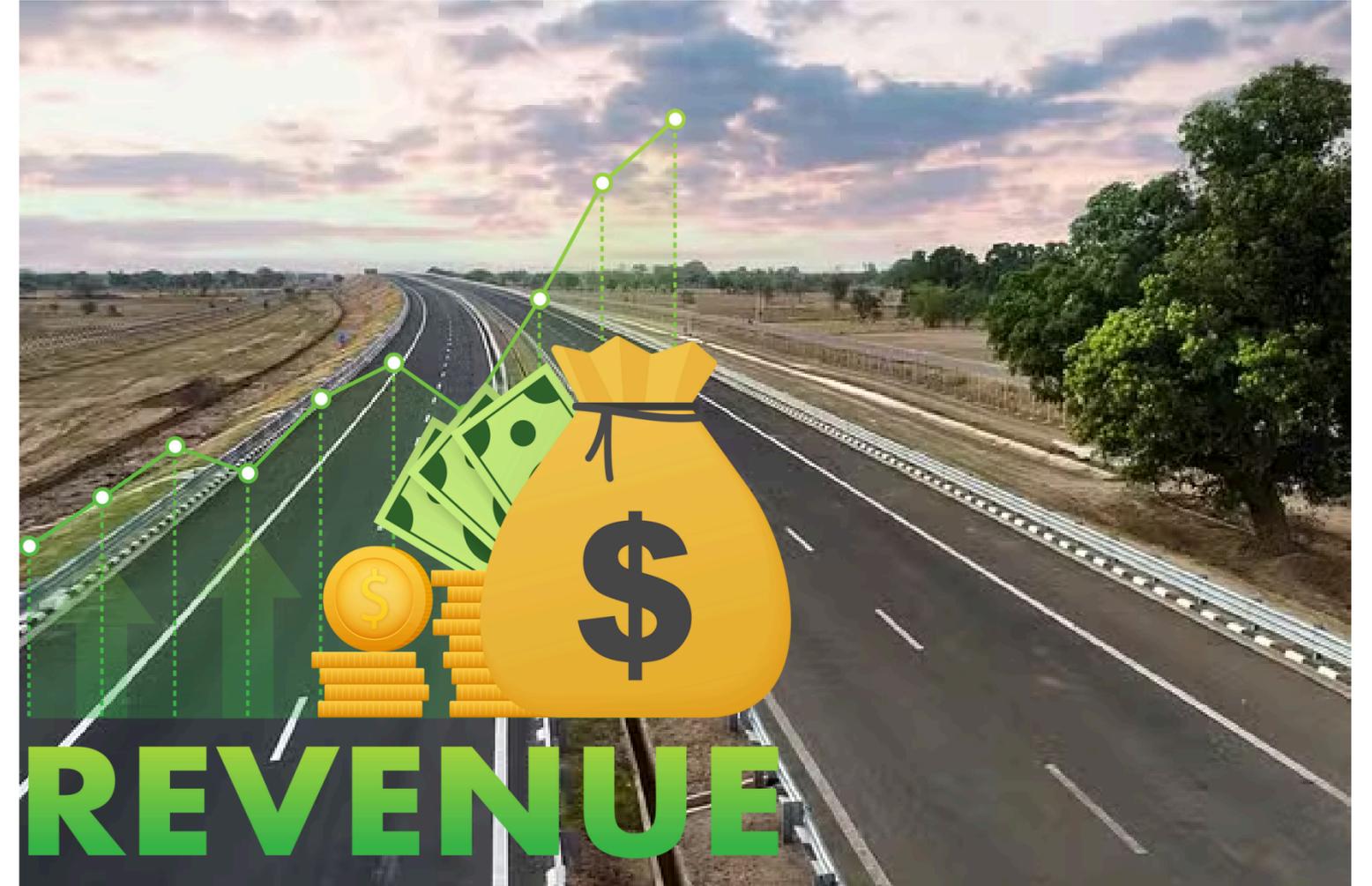
टोल कटने के बाद वाहन चालक को SMS के जरिए इसकी सूचना मिल जाएगी।

20 किमी से ज्यादा दूरी तय करने पर वाहन मालिक से कुल दूरी पर शुल्क लिया जाएगा।

सोर्स: टूटू धवन, ऑटो एक्सपर्ट (नई दिल्ली)

GNSS से राजस्व पर पड़ने वाला असर

- वर्तमान में NHAI प्रत्येक वर्ष लगभग 40000 करोड़ रुपये का टोल रेवेन्यू कलेक्ट करता है।
- GNSS के लागू होने से आने वाले 2 से 3 वर्षों में इसकी 40000 करोड़ से 1.4 खरब तक बढ़ जाने की संभावना है।



GNSS सिस्टम वाहन चालकों के लिए ज्यादा सुविधाजनक क्यों है



हाइवे पर टोल टैक्स ऑटोमैटिक कट जाएगा। इसके लिए उन्हें टोल प्लाजा पर रुकने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

वाहन चालकों को ऑनलाइन भुगतान की सुविधा भी मिलेगी, जिससे उन्हें नकद या कार्ड की जरूरत नहीं होगी।



टोल प्लाजा पर वाहनों की लाइन नहीं लगेगी, जिससे टाइम और फ्यूल की बचत होगी।

वाहन मालिकों को अपने वाहन की स्थिति की सटीक जानकारी मिल सकेगी।



फास्टैग की तुलना में इसकी मेटेनेंस कॉस्ट कम होगी, जिससे सरकार का टोल रेवेन्यू बढ़ेगा।

सोर्स: टूटू धवन, ऑटो एक्सपर्ट (नई दिल्ली)

- NHAI इसे हाइब्रिड मॉडल तरह
- क्या फास्टैग समाप्त हो जाएगा ?
- GNSS टोल सिस्टम से नुकसान
- वाहन टनल में होने पर सिग्नल की समस्या
- खराब मौसम में सिग्नल
- चालको की प्राइवैसी की समस्या

फास्टैग और GNSS सिस्टम में क्या फर्क है

फास्टैग
NETC
NATIONAL ELECTRONIC TOLL COLLECTION

FASTAG
Easy to Cruise

यह रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID) पर आधारित सिस्टम है।

इसमें एक टैग होता है जो वाहन की विंडशील्ड पर लगाया जाता है।

जब वाहन टोल प्लाजा से गुजरता है तो टैग ऑटोमैटिक टोल टैक्स काट लेता है।

यह टैग सिर्फ टोल प्लाजा पर काम करता है।

GNSS सिस्टम

यह एक सैटेलाइट आधारित सिस्टम है।

इसमें एक डिवाइस होती है, जो वाहन में लगाई जाती है।

यह डिवाइस सैटेलाइट से सिग्नल प्राप्त करती है।

इसका उपयोग वाहन ट्रैकिंग, फ्लीट मैनेजमेंट और इमरजेंसी सर्विसेज के लिए किया जा सकता है।

सोर्स: दूदू धवन, ऑटो एक्सपर्ट (नई दिल्ली)